समय ने ली अंगड़ाई अब घड़ी सुहानी आई
खत्म हुआ कलयुग नई दुनिया आई की आई
अपने घर चलने की कर लो अब पूरी तैयारी
कर्मातीत बनने के लिए लगा दो शक्ति सारी
कल्प के अंत में मिलता अवसर एक ही बार
देहभान त्यागकर बन जाओ अब बिन्दु सार
त्यागो अवगुण सारे पहनो गुणों की माला
अवगुणों ने बनाया है आत्मा का रंग काला
सोचो सतयुगी जीवन कैसा निराला होगा
हर कोई वहां पर पावन तन मन वाला होगा
नहीं होंगे विकार वहां ना दुख की होगी बात
दिन होंगे सुरीले वहां और रँगीली होगी रात
ना छुएंगे किसी का तन फिर भी करेंगे प्यार
मन के संकल्पों से ही होगा बातों का संचार
शेर और बकरी वहां पिएंगे एक घाट पर पानी
सम्पन्न सभी होंगे वहां जैसे राजा और रानी
हर दिन वहां पर हम उत्सव स्वरूप मनाएंगे
चिंतामुक्त होकर हम चैन की बंसी बजाएंगे
तो आओ हम सब ईश्वरीय श्रीमत अपनाएं

राजयोग के बल से इस नर्क को स्वर्ग बनाएं
ॐ शांति